विकास या विनाश!

ओरेन गिंझबर्ग

हिन्दी अनुवाद : अरविंद गुप्ता

THERE YOU GO!

Oren Ginzburg

Survival

There you go!

Oren Ginzburg

Oren Ginzburg is an author and founder of Hungry Man Books and works for the Global Fund to Fight Aids, Tuberculosis and Malaria.

Hindi - English Bilingual Edition 2014

BANYAN TREE
1-B Dhenu Market, Second Floor,
Indore : 452003, (India)
Tel : 91-731-2531488, 2532243
Mob : 91-9425904428
Email: banyantreebookstore@gmail.com
Website: www.banyantreebookstore.weebly.com

First Published by Hungry Man Books, March 2005
Text and Illustrations © **Oren Ginzburg**
Foreword and appendices © Survival International

"Published with permission from Oren Ginzburg"

ISBN 978-93-82400-13-4

विकास या विनाश!

ओरेन गिंझबर्ग

THERE YOU GO!

Oren Ginzburg

हिन्दी अनुवाद : अरविंद गुप्ता

BANYAN TREE

प्रस्तावना

विकास या विनाश! नाम की सचित्र पुस्तक वास्तव में आदिवासियों के अधिकारों की सुरक्षा के लिए एक हथियार है। पिछले 35 साल में 'सरवाईवल' नामक संस्था के साथ काम के दौरान मुझे ऐसी कोई अन्य सामग्री नहीं मिली जिसने इतने सरल और सटीक तरीके से इस समस्या पर वार किया हो। आदिवासियों की जिंदगी और विकास जैसी अवधारणाएं आज शब्दों की चाशनी में पूरी तरह पक चुकी हैं। पर अगर आप उनकी सच्चाई को समझना चाहते हैं तो इस पुस्तक को जरूर पढ़ें।

आदिवासियों का विकास उनकी मर्जी के खिलाफ किया जा रहा है। क्यों? ताकि बाहरी लोग उनकी जमीन और संसाधनों को हड़प लें। यहां उन्नीसवीं शताब्दी के औपनिवेशिकवाद ('जिसे हम खूब जानते हैं') को बीसवीं सदी का सही राजनैतिक जामा पहनाया जा रहा है। आदिवासी समाज पिछड़ा नहीं है। उनका समाज भी अन्य समाजों जैसा ही एक स्वतंत्र, जीवांत समाज है जो बदलती परिस्थितियों के अनुकूल खुद को लगातार ढालता रहा है। हमारे और आदिवासी समाज में बस एक मुख्य अंतर है। एक ओर हम विकास के नाम पर आदिवासियों की जमीन और संसाधनों को धड़ल्ले से लूट रहे हैं। दूसरी ओर हमारा मानना है कि यह घिनौना रंगभेद, झूठ-फरेब, लूट-खसौट आदि उन आदिवासियों के हित में है। पर यह आदिवासियों का विकास नहीं, उन पर आक्रमण है।

'सरवाईवल इंटरनेशनल' संस्था आदिवासियों को खुद के अधिकारों के लिए लड़ने, भूमि सुरक्षा और खुद अपना भविष्य तय करने में मदद करती है। ओरेन गिंझबर्ग की इस सुंदर पुस्तक को दुनिया भर के आदिवासी समाजों और साथ-साथ सरकारों के साथ साझा करने में हमें अपार प्रसन्नता है। शायद सोई सरकारों को इससे कुछ सुध आए और वे अपने अमानवीय तरीकों में कुछ सुधार लाएं।

स्टीफेन कोरी,
निदेशक, सरवाईवल इंटरनेशनल

Foreword

'*There you go*!' is an arrow defending tribal peoples. In my 35 years with Survival, I have not come across anything else that hits the bull's eyes with such simplicity, accuracy and irrepressible humour. Today the subject of tribal peoples and development is saturated with words, but if you really want to understand what's going on, read this book.

The 'development' of tribal peoples against their wishes - really to let others get their land and resources - is rooted in 19th century colonialism ('we know best') dressed up in 20th century 'politically correct' euphemism. Tribal peoples are not backward: they are independent and vibrant societies which, like all of us always, are constantly adapting to a changing world. The main difference between tribal peoples and us is that we take their land and resources, and believe the dishonest, even racist, claim that it's for their own good. It's conquest, not development.

Survival International helps tribal peoples defend their lives, protect their lands and determine their own futures. We are delighted to have the opportunity to give Oren's book to tribal communities around the world, as well as to governments and others who should know better and who must stop living in the past.

Stephen Corry

Director, Survival International

शुरू से ही हमारी मंशा एकदम साफ और स्पष्ट थी:

Our original aim was the same as usual:

उनका स्थाई रूप से विकास करना।

To bring them Sustainable Development.

पर, इस बार हमें

However, in this specific case

एक मुश्किल चुनौती का सामना करना पड़ा:

we encountered an unexpected challenge:

यह लोग, न जाने क्यों,

It turns out that these people,

किसी अनजानी वजह से खुद–ब–खुद,

in their own strange kind of way,

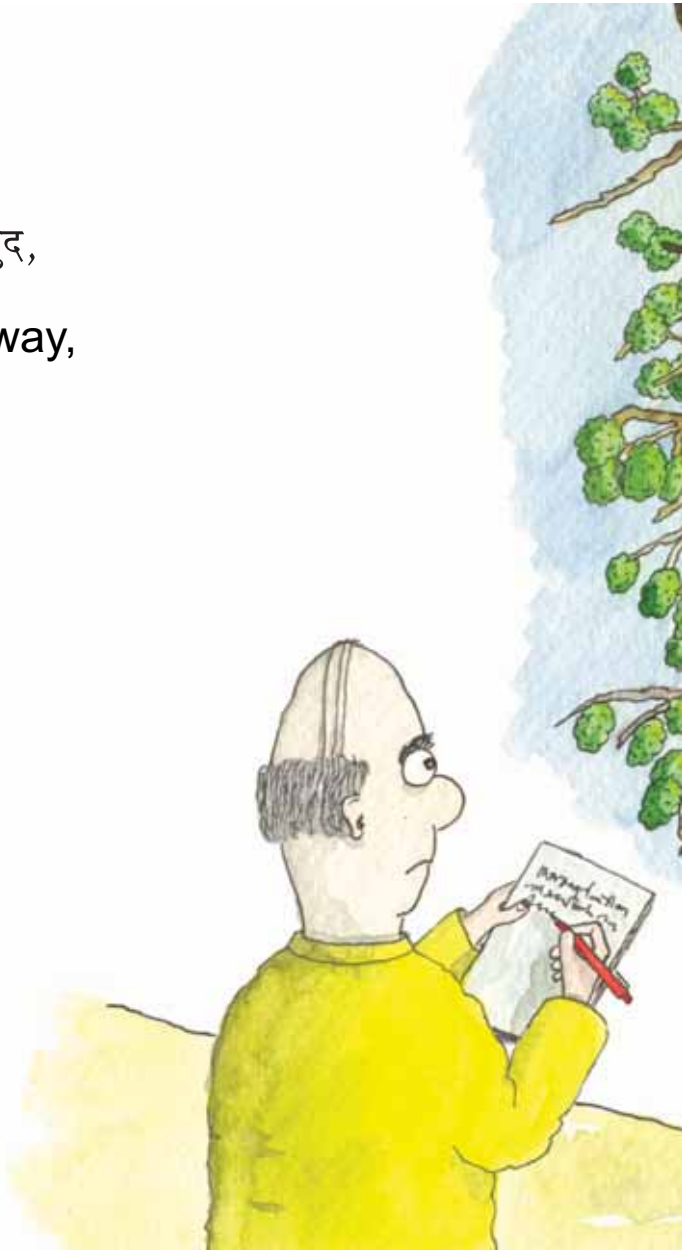

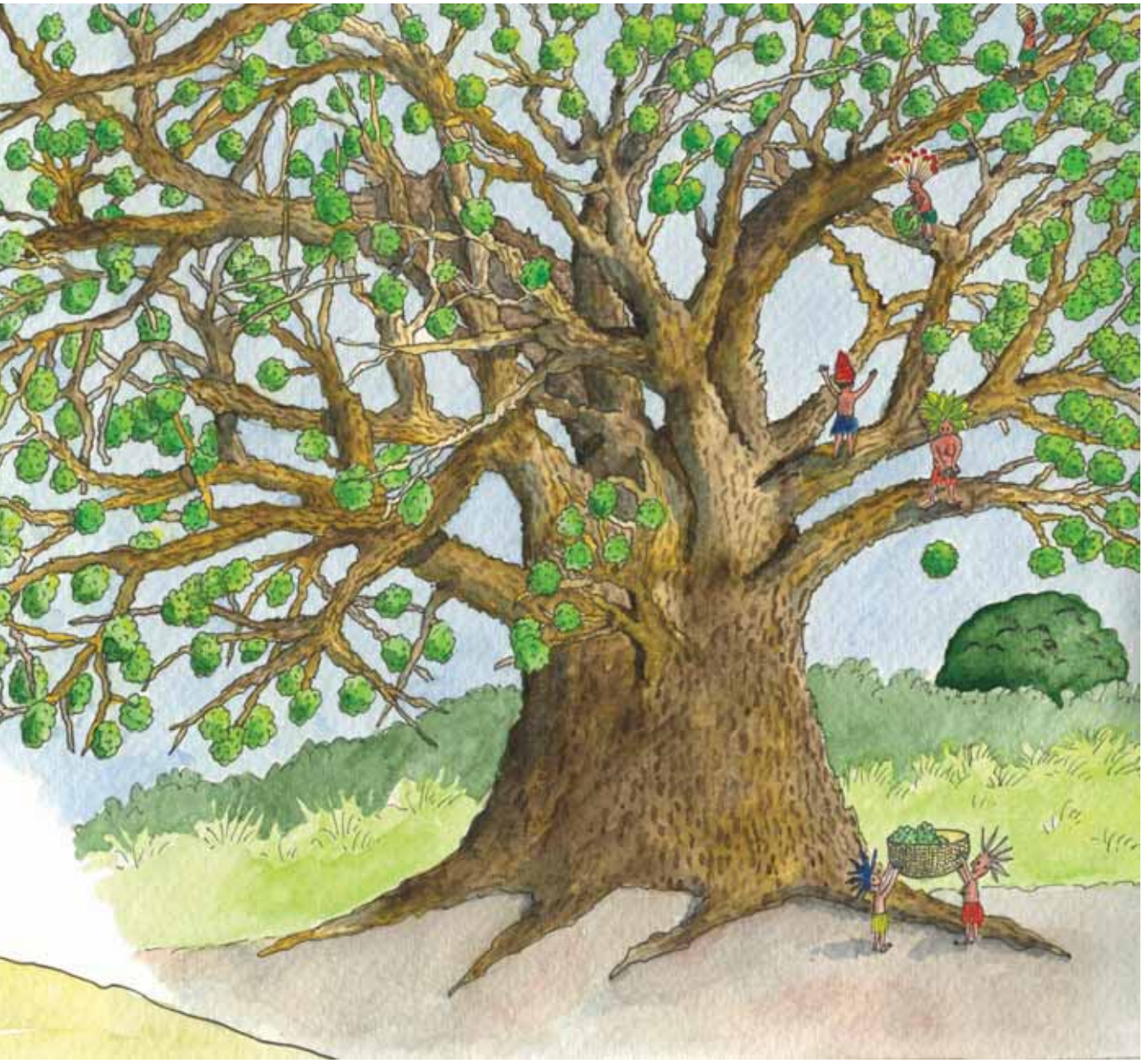

एक अच्छी-भली जिंदगी जी रहे थे।

Were already sustainable.

इसलिए हमने बहुत श्रम से उनका किया . . .

So all we could really bring them was...

विकास।

Development.

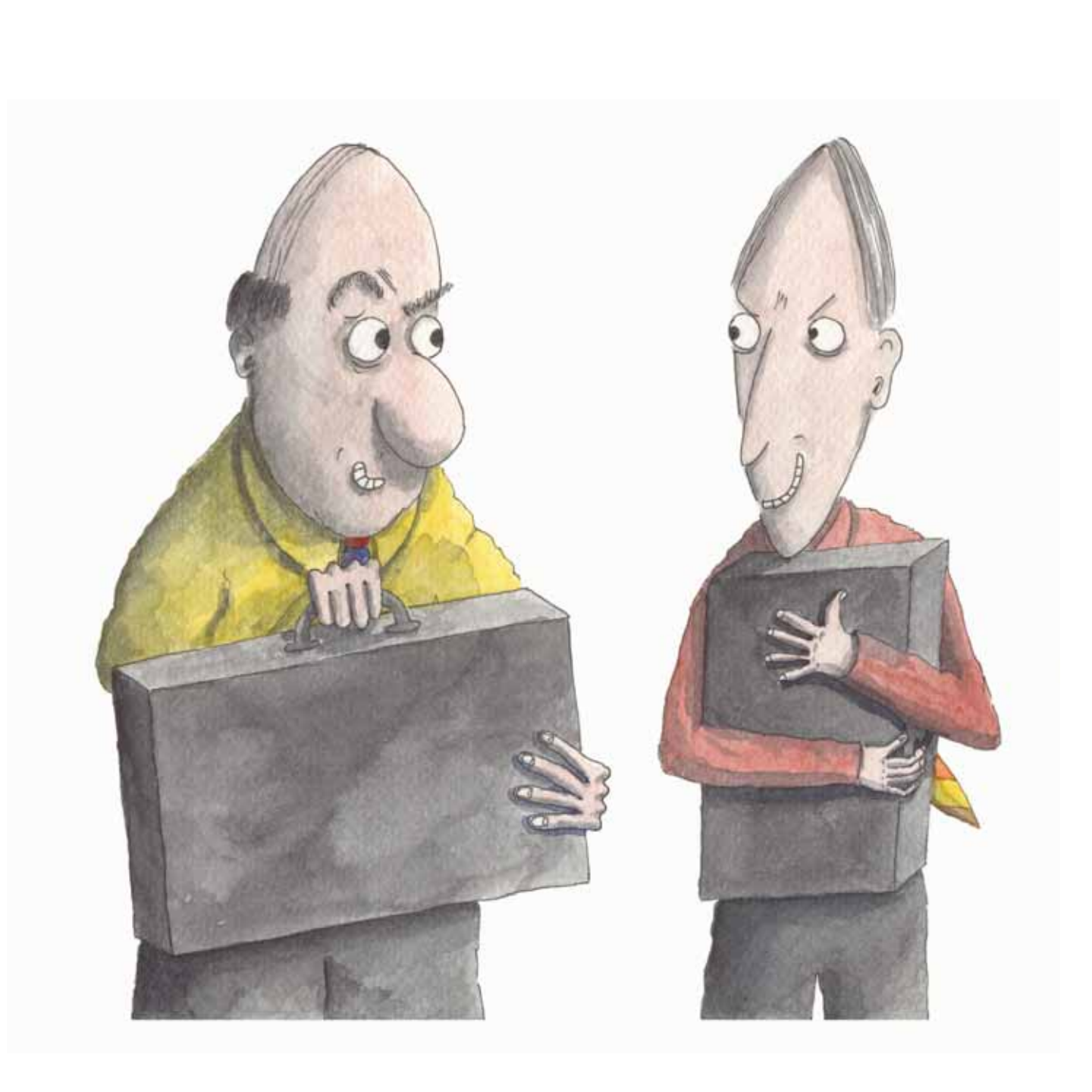

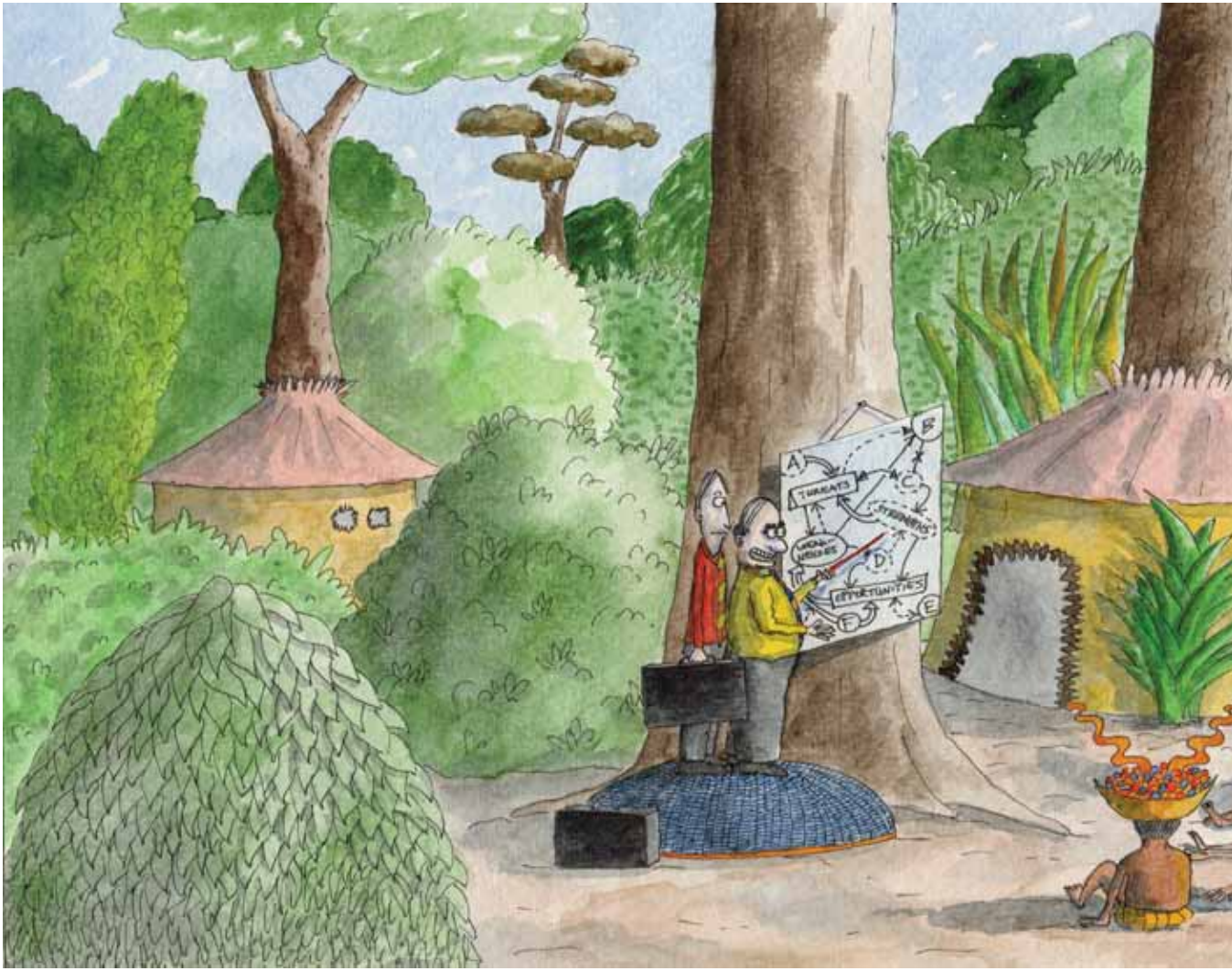

हमने उनके सामुदायिक विकास के लिए भागीदारी योजना चलाई

We started with Participatory Community Development

परंतु उन्होंने उसमें पूरी तरह से भाग नहीं लिया।

But they did not fully participate.

हमने उनकी आमदनी बढ़ाने का कार्यक्रम चलाया

We tried income-generating activities

परन्तु उनमें कई लोग अपनी थोड़ी सी कमाई से भी काफी संतुष्ट लगे।

But some people seem satisfied with less than a dollar a day.

हमने उनके सशक्तिकरण की कोशिश की

We even attempted to empower them

परन्तु इसका उन्होंने काफी
शक्तिशाली तरीके से विरोध किया।

But their reaction was more
powerful than expected.

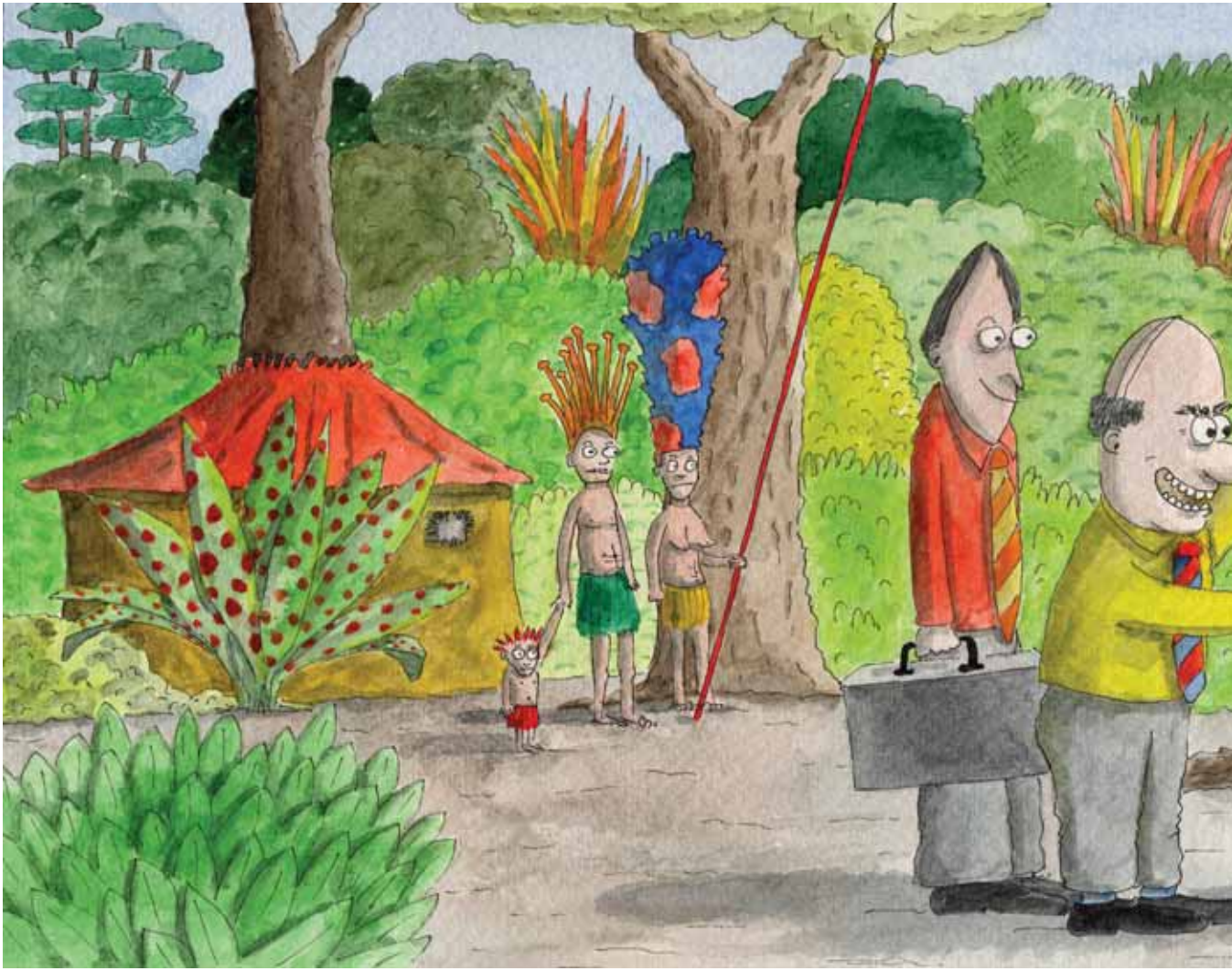

तब हमने एक समन्वित कल्याणकारी योजना चलाई
जिससे फायदा सभी लाभार्थियों तक पहुंचे।

So we opted for a Multi-Stakeholder Cross-Disciplinary Integrated approach.

हमने निजी क्षेत्र के साथ साझेदारी
का एक नायाब कार्यक्रम रचा।

We developed innovative
Private Sector Partnerships.

हमने बदलते आर्थिक परिवेश में लोगों को नए व्यवसाय सीखने के लिए हुनर प्रशिक्षण दिया।

We developed Vocational Skills
adapted to a shifting economy.

पर्यावरण संरक्षण और भविष्य में उसको हानि से
बचाने के लिए हमने कठोर कदम उठाए।

We developed tough conservation measures,
to protect the environment from further harm.

हमने एक महत्वाकांक्षी सामाजिक सुरक्षा नेटवर्क कायम किया

And we developed ambitious Social Safety Nets

उनके लिए जो लोग खुद अपनी देखभाल करने में असमर्थ थे।

For those unable to take care of themselves.

WAIT HERE

चुनौतियों से भरी इस प्रक्रिया
के दौरान हमने कई सबक सीखे।

This has been a challenging process
with many lessons learned.

आने वाले भविष्य में हम इन सीखों को जरूर कहीं और लागू करेंगे।

We certainly look forward to applying them elsewhere in the very near future.

पर अभी के लिए बस इतना ही।

But for now let us just say:

इस वैश्विक-गांव में आपका हार्दिक स्वागत है!

Welcome to the Global Village!

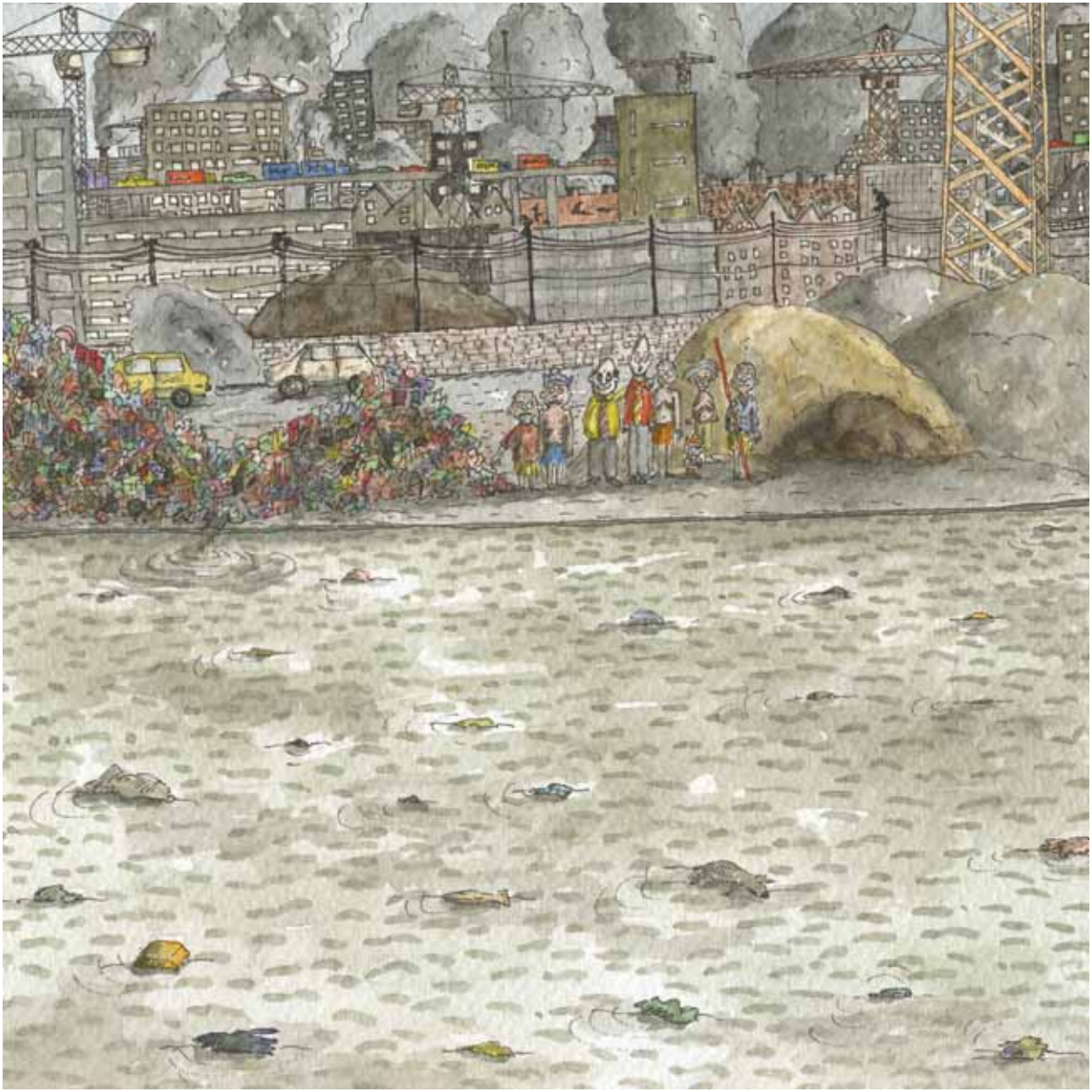

विकास या विनाश! सिलसिला दुबारा शुरू

विकास के नाम पर आदिवासियों का सर्वनाश हो रहा है। कारण स्पष्ट हैं। बाहरी लोग उनकी जमीन और संसाधन लूट रहे हैं। आदिवासियों के सामने विवाद का यही सबसे प्रमुख विषय है। यह समस्या केवल गरीब देशों तक सीमित नहीं है।

कनाडा जैसे विकसित देश में लैबराडौर एवं क्यूबेक क्षेत्रों की इनू इंडियन जनजातियों को अलग-अलग इलाकों में बसाया गया है। इन जनजातियों के 'विकास' की सच्चाई को इस पुस्तक 'देयर यू गो' में चित्रित किया गया है। 1960 तक इनू लोग पूर्णत: आत्मनिर्भर थे। पर अब उनमें से बहुत कम लोग ही झीलों में से मछलियां पकड़ते हैं या फिर कारिबाऊ हिरणों का शिकार करते हैं। असंवेदनशील शिक्षा और कल्याणकारी योजनाओं पर पूरी तरह निर्भरता और गरीबी ने इनू लोगों की जीवनशैली और आत्म-सम्मान को पूरी तरह तहस-नहस किया है। घरेलू हिंसा, नशीली दवाओं का दुरुपयोग, ड्रग्स और शराब का पूरी तरह बोलबाला है। आज इनू समुदाय में आत्महत्या की दर दुनिया में सबसे अधिक है। शायद ही कोई ऐसा परिवार हो जहां किसी युवक या युवती ने आत्महत्या में अपनी जान न गंवाई हो।

कनाडा कहता है कि वो इनू समुदाय के भूमि अधिकारों पर अवश्य विचार-विमर्श करेगा, पर पहले आदिवासी उन इलाकों को छोड़ें। संयोगवश जिन क्षेत्रों में इनू समुदाय बसे हैं वहां की जमीन में दुनिया की सबसे मंहगी निकिल धातु दबी है। इनू समुदाय ने अभी हार नहीं मानी है। उनकी लड़ाई का संघर्ष लगातार जारी है। पर उनका शत्रु बहुत ताकतवर है और अभी भी पूर्वाग्रहों से ओतप्रोत है।

There you go, again

The destruction of tribal peoples in the name of 'development' - invariably because outsiders want their land and its resources - continues to be the most acute problem they face. It is not confined to poor countries.

In Canada, the Innu Indians of Labrador and Quebec have been settled in communities which are subject to the 'development' depicted in 'There you go!'. The Innu were self-sufficient as recently as the 1960s. Now, very few hunt the caribou or fish the lakes they once depended on. Grossly insensitive schooling, total dependency on welfare programmes and the resulting abject poverty have largely destroyed their way of life and demolished their self-esteem. Domestic violence and the cheapest forms of drug abuse - gas sniffing and alcoholism - are rife. Some communities have the highest suicide rate in the world and every family knows at least one teenager who has killed him or herself.

Canada says it will negotiate about their land rights, but only once the Indians have abandoned them. It is no accident that Innu territory includes some of the world's richest nickel deposits. The Innu have not given up : they are struggling to fight back, but they face powerful odds and grossly out-of-date prejudice.

जुझारू लड़ाई!

इस पुस्तक में आदिवासियों का जो भविष्य चित्रित किया गया है, वो वैसा ही हो यह जरूरी नहीं।

1970 में एमेजॉन की सबसे बड़ी जनजाति यानोमामी की जीवनशैली को ब्राजील के सड़क विस्तार कार्यक्रम से एक बड़ा धक्का लगा। अंतर्राष्ट्रीय दबाव के बावजूद 'सरवाईवल' ने आदिवासियों के अधिकारों के लिए लड़ने की मुहिम छेड़ी। सोने का खनन करने वाले बाहरी मजदूरों द्वारा लाई बीमारियों से करीब बीस प्रतिशत यानोमामियों का देहांत हो गया।

एक लम्बे संघर्ष के बाद, 1992 में यानोमामी समुदाय की जीत हुई और उन्हें अपनी पुश्तैनी भूमि वापस मिली। समस्या अभी भी पूरी तरह से निपटी नहीं है। परन्तु अपने अधिकारों की लड़ाई के लिए अब आदिवासियों के पास अपना खुद का संगठन है। इन समुदायों के पास अब अपने खुद के स्कूल हैं। यहां बच्चे अपने समुदायों के शिक्षकों से बाहरी हमले से जूझना सीख रहे हैं। यानोमामी लोगों ने अपनी सबसे समृद्ध परम्पराओं को अभी भी जीवित रखा है। वो खुद को गरीब या पिछड़ा नहीं मानते हैं। भविष्य में आने वाली कई पीढ़ियों तक यानोमामी अपनी जीवनशैली के अनुसार एक सुखद जीवन जीने का सपना संजो रहे हैं।

दुनिया भर के आदिवासी समुदायों के बारे में और अधिक जानकारी और उनकी सहायता करने के लिए कृपा नीचे दी वेबसाईट पर अवश्य जाएं:

www.survival-international.org

सरवाईवल इंटरनेशनल

Fighting back!

The future for tribal peoples doesn't have to be as depicted in this book.

In the 1970s one of the largest Amazonian tribes, the Yanomami, was threatened by the destruction of its land to make way for Brazil's road programme. Despite the international campaign Survival launched to defend the Indians, about 20% of Yanomami tragically died from diseases brought in by gold miners.

The campaign was victorious in 1992, when all Yanomami land was secured. Although their problems are not over, the Indians now have their own organisation to press for their rights. In some communities, children are learning from their own teachers and in their own schools how to cope with outside threats. The Yanomami remain true to the best of their traditions. They do not see themselves as poor or backward, and can expect to lead fulfilling lives - as Yanomami - for generations to come.

To read, watch and hear more about tribal peoples and find out how you can help, please contact :

Survival International
6 Charterhouse Buildings
London EC1M 7ET, UK
Survival also has offices in
France, Germany, Italy, Spain and the Netherlands.
T. +44 (0) 20 7687 8700
www.survival-international.org, www.notprimitive.in
info@survival-international.org

BANYAN TREE TITLES

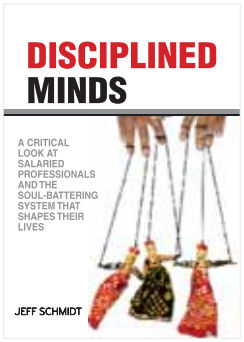

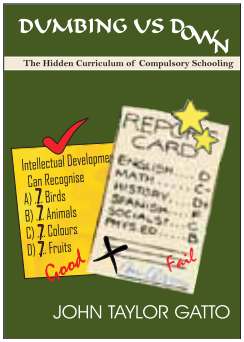

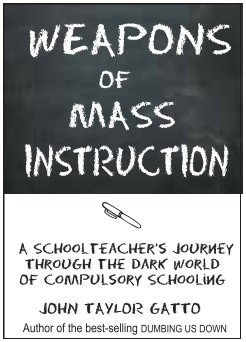

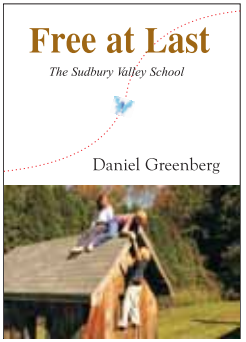

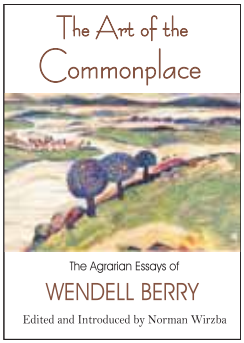

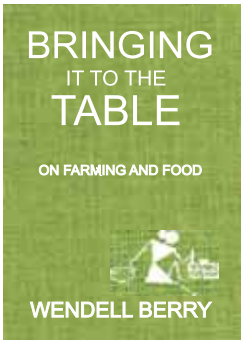

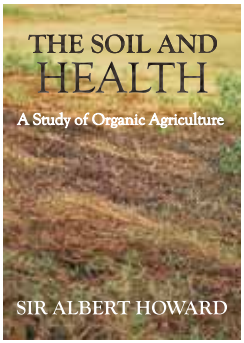

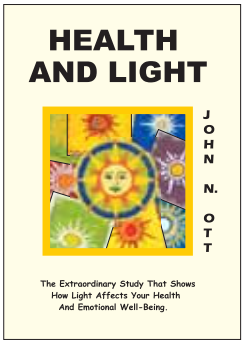

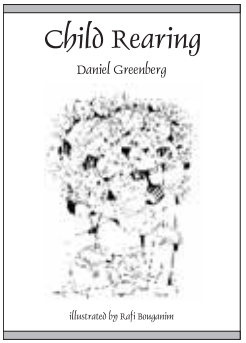

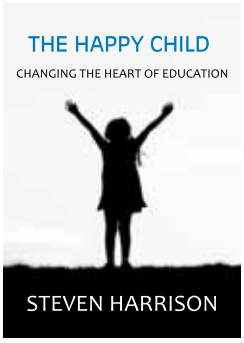

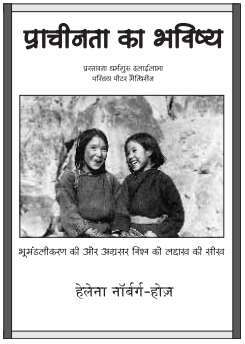

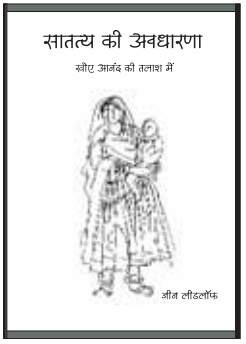

Banyan Tree publishes and distributes multi-lingual books in English, Hindi and other Indian languages. Our books establish the relationship between the living and the non-living and question the predefined notions of an institutionalised world. They offer an understanding of the power of our traditional and cultural roots, which run deep, much like the roots of a banyan tree.

At **Banyan Tree** the reader will find books that challenge the institutionalisation of knowledge, culture and traditions; the control and adulteration of food; conventional chemical farming practices and lifestyle habits that are harmful to health. We offer books on learning, sustainable development, health, natural agricultural practices and ecology.

We strongly believe that '*nothing can be taught*' and that '*work is the best teacher*'.

Write to :

BANYAN TREE

1-B Dhenu Market, Second Floor,
Indore : 452003, (India)
Tel : 91-731-2531488, 2532243
Mob : 91-9425904428
Email: banyantreebookstore@gmail.com
Website: www.banyantreebookstore.weebly.com

बनियन ट्री ऐसी पुस्तकों का प्रकाशन एवं वितरण करते हैं जो जड़ एवं चेतन के संबंधों को आपस में जोड़ती हैं। हमारी पुस्तकें संस्थानीकृत विश्व की पूर्व परिभाषित अवधारणाओं को चुनौती देती हैं; अपनी परंपरागत एवं सांस्कृतिक जड़ों की ताकत की समझ को उसी प्रकार सुदृढ़ करती हैं जैसे बरगद की जड़ें।

यहाँ आपको ऐसी पुस्तकें मिलेंगी जो ज्ञान, संस्कृति एवं परंपरा के संस्थानीकरण को चुनौती देती हैं; पुस्तकें जो भोजन, स्वास्थ्य एवं कृषि के नियंत्रण और मिलावट को चुनौती देती हैं; सीखने, स्कूल-विहीन शिक्षा तथा, परिवेष के टिकाऊ विकास पर पुस्तकें।

हमारा यह अटल विश्वास है कि *''कुछ भी पढ़ाया नहीं जा सकता''* तथा *''काम ही गुरू है''* ।

संपर्क करें :

बनियन ट्री

1-बी, धेनुमार्केट, दूसरा माला
इंदौर – 452003, इण्डिया
टेली : 91-731-2531488, 2532243
मोबाइल : 9425904428
ई-मेल: banyantreebookstore@gmail.com
वेबसाइट: www.banyantreebookstore.weebly.com

अगली बार के लिए नोट :

किसी स्थानीय नेता को अवश्य चुनें, जिससे कि निर्णय की प्रक्रिया में उनकी भागीदारी बढ़े।

Note for next time :

Don't forget to select a local leader to increase ownership of the decision-making process.

बनियन ट्री

1-बी, धेनुमार्केट, दूसरा माला, इंदौर – 452003,
टेली : 91-731-2531488, 2532243
मोबाइल : 9425904428
ई-मेल: banyantreebookstore@gmail.com
वेबसाइट: www.banyantreebookstore.weebly.com

BANYAN TREE ₹

ISBN 978-93-82400-12-7